Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की विशेषताएँ एक अध्ययन

Dr. Ekta Kaushik[1]* Dr. Indira Sharma[2]

[1] Doctorate

[2] Retd. Professor, INPG College, Meerut

सार – *छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसमें एक ओर मुक्तक-शैली के सदाबहार ददरिया-गीत मिलते हैं, तो दूसरी ओर प्रबंध-गीतों के अंतर्गत गोपल्ला गीत, रायसिंह का पवारा तथा राजा वीरसिंह की कांहनी जैसे लंबे कथात्मक गीत भी मिलते हैं, जिसमें पराक्रम और विजय का अद्भुत वर्णन है। वार्तालाप-शैली का निर्वाह ददरिया-गीतों में बखूबी मिलता हैं। विवाह-गीतों में पुनरावृत्ति-शैली के दर्शन सहज ही किए जा सकते हैं। लोक- साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश लोकगीतों के रूप में प्राप्त होता हैं।*

कुंजीशब्द – *छत्तीसगढ़ी लोकगीतों*

----------X----------

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसमें एक ओर मुक्तक-शैली के सदाबहार ददरिया-गीत मिलते हैं, तो दूसरी ओर प्रबंध-गीतों के अंतर्गत गोपल्ला गीत, रायसिंह का पवारा तथा राजा वीरसिंह की कांहनी जैसे लंबे कथात्मक गीत भी मिलते हैं, जिसमें पराक्रम और विजय का अद्भुत वर्णन है।

वार्तालाप-शैली का निर्वाह ददरिया-गीतों में बखूबी मिलता हैं। विवाह-गीतों में पुनरावृत्ति-शैली के दर्शन सहज ही किए जा सकते हैं। लोक- साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश लोकगीतों के रूप में प्राप्त होता है।

कृष्णदेव उपाध्याय- ‘‘लोक साहित्य में लोकगीतों की ही प्रधानता है। सच तो यह है ये इसकी आत्मा है।’’[1] लोकगीत लोक-साहित्य का ही गीत एक प्रधान अंग है, जिसका उद्भव नगर और ग्रम के संयुक्त साधारण-जन के मध्य होता है।

वृहत हिंदी कोष के अनुसार- ‘‘लोकगीत का अर्थ है साधारण जनता में प्रचलित गीत।’’[2] लोकगीत हमारे ऐहिक जीवन के पल-पल के साथी हैं।

महात्मा गाँधी- ‘‘ये गीत जनता का साहित्य है, सच पूछो तो लोकगीत ही जनता की भाषा है।’’

लोकगीत हमारे जीवन के हर मार्मिक क्षण के, हमारे दुःख-सुख के प्रत्येक स्पंदन के साथी है। लोकगीत लोक-निसृत प्राकृतिक गान हैं, जिसमें लोक का उल्लास, उसकी पीड़ा, उसका हृदय एवं समस्त जीवन व्यक्त हुआ है। इन लोकगीतों का चित्र-फलक इंद्रधनुशी हैं, जो क्षितिज के एक छोर से उठता है और दूसरे छोर पर समाप्त होता है। वह अपने विज्ञान में बहुचित्र छिपाए रहता है, जिसके कोष में एक नहीं विभिन्न रंग हैं।[3]

संपूर्णानंद- ‘‘लोकगीत केवल व्यक्तियों के सुख-दुःख की गाथा नहीं गाते, लोकोल्लास और लोकोल्लाप का भी अभिव्यंजन करते हैं।’’[4] लोकगीत एक गीत है अथवा स्वर-माधुर्य से युक्त एक गेय काव्य है, जो कि अशिक्षित जन-समुदाय के बीच अतीत के अनजाने ही उत्पन्न हो जाता है।

एनसायकलोपीडिया ब्रिटेनिका- ‘‘आदिम स्फूर्त संगीत को ही लोकगीत की संज्ञा प्राप्त हुई है।’’

लोकगीत के संबंध में यह कहा जा सकता है कि लोकगीत स्वर-माधुर्य से युक्त, एक अधर से दूसरे अधर पर थिरकने वाली लोक-हृदय की वह सहज अभिव्यक्ति है, जिसमें जीवन और संस्कृति की संपूर्ण व्याख्या परंपरा एवं इतिहास का हाथ पकड़ कर चलती है।

हिंदी साहित्य कोष- ‘‘वह लोक का अपना गीत होता है, जो परंपरा में पड़ जाता है और परंपरा उसमें समय-समय पर अनुकूल परिवर्तन करती रहती है।’’[6]

लोकगीतों के वर्ण्य-विषय अत्यधिक व्यापक और विस्तृत है। इनका विस्तार जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कारों,

विशेष घटनाओं एवं अवसरों, ऋतु-परिवर्तनों, समस्त रसों और समस्त जातियों से प्राप्त होता है।

लोकगीतों में लोक का हृदय छलक आता है। अतः इसमें लोक-जीवन का जितना सहज एवं यथार्थ चित्रण मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। लोक-जीवन को यदि समीप से पढ़ना है तो लोकगीतों के खुले पृष्ठों से अधिक महत्वपूर्ण सामग्री अन्यत्र प्राप्त हो सकती है। किसी जाति के लोकगीत उसके विधान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

अतः इन्हीं लोकगीतों के आधार पर हम अपने विभिन्न कार्यक्रमों में इन गीतों के माध्यम से अपनी खुशियों में चार चाँद लाते हैं।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

जन्मोत्सव में

उत्सवधर्मी छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में रामकथा गूँथे हुए हैं। यहाँ जन्म-संस्कार के समय आचारों का लंबा अनुश्ठान होता है, जिसे जन्म के गीत कहते हैं, जिनमें 'सोहर' प्रधान है। लोक की अयोध्या में राम का अवतार होते ही उनका अभिनंदन जिन भावभीने समान में किया जाता है, वह जन्म संबंधी गीतों में देखते ही बनता है।

नवजात बालक या बालिका में राम एवं सीता को देखकर आनंदित माताएँ अपने जीवन के अभावों को भूलकर कौशल्या व सुनयना के समाज का सुख पाती हैं। वे सामाजिक अवस्था के नेगियों को भरपूर दान-दक्षिणा से उपकृत करना चाहती हैं-

''राम जनम लिन्हें, भगवान जनम लिन्हें

चइत राम नवमी में राम जनत लिन्हें।

सुईन आवय नेरूवा छिनै

नेरूवा छिनऊनी देबो मन के मड़वनी

सखियाँ आवयँ सोहर गावयँ

सोहर गवउनी देबो मन के मड़वनी

चइत रामनवमी में राम जनम लिन्हें।''

वैवाहिक अवसरों पर

विवाह सभी संस्कारों में महत्वपूर्ण है। इसमें दो आत्माओं के मिलन के साथ सृष्टि के विकास का बीज भी समाहित है। छत्तीसगढ़ी लोक-जीवन की अभिव्यक्ति विवाह-गीतों से स्पश्ट है। लोक में विवाह के अवसर पर वर-वधू विष्णु-लक्ष्मी, शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण के रूप में पूजित होते हैं। लोक की यह विशेषता है कि वह ईश्वरत्व में मनुष्यत्व और मनुष्यत्व में ईश्वरत्व को प्रतिष्ठापित करता है। श्रीराम कथापरक विवाह-गीतों में लोक की अभिव्यक्ति देखिए-

''एक तेल चढ़ियो हो हरियर हरियर

मँड़वा मँ दुलरू तोर बदन कुम्हिलाय

राम लखन के ओ राम लेखन के

तेल ओ चढ़त हे दाई,

तेल ओ चढ़त हे।

कँहवा के दियना होवै अँजोर

राम लखन के दाई तेल ओ चढ़त हे

कौसिल्या के दियना मोर होवै अँजोर।''

भोजली-गीतों में

लोक-पर्व भोजली के गीतों में पौराणिक, ऐतिहासिक प्रसंगों के साथ-साथ राम महतारी कौशल्या जी तथा श्री राम-सीता का भी पावन उल्लेख मिलता है, जैसे-

''देवी गंगा देवी गंगा लहर तुरंगा

हो लहर तुरंगा

हमरो देवी भोजली के भींजै आठो अंगा

अहो देवी गंगा.....।

कौसल्या माई के मइके म भोजली सरोबो

सियाराम के दरसन करके तोला परघाबो।

अहो देवी गंगा.....।''[10]

www.ignited.in

ददरिया-गीतों में

अध्ययन के उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक का अध्ययन

2. लोक-गीतों की विशेषताएँ अध्ययन

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की रानी ददरिया की गूँज में सामूहिक चेतन धारा की संगीत का स्वर सुनाई देता है। ददरिया का वर्ण्य-विषय मूलतः श्रृंगार है, फिर भी लोक-प्रेम के इस लोकगीत में रामकथा के पात्रों का सहज उल्लेख मिलता है। इसके अंतर्गत श्री राम वन-गमन, सीता-अन्वेष्ण तथा मुक्तिदाता के रूप में श्रीराम का स्मरण किया जाता है, जैसे-

''बोलो बोला मुनिरंजन हरि गुन गावे

रे चिरैया बोले।

पागा ल बाँधे पुरुत करक

राम सिरिया नहाले सुरूत करके।

कोन बन मं आमा कवन बन जाम

कोन बन के चिरैया बोलथे राजाराम

राम धरे धनही लखन धरे बान,

सीता माई के खोजन बर छुटे हे हनुमान।''

रावत के दोहों पर

रावत-नाचा के दोहों में स्वाभाविकता, जीवन का यथार्थ, अनुभूत भावनाएँ प्रमुख विषय बनती हैं। पारिवारिक, सामाजिक जीवन के प्रसंग, हास्य-व्यंग्य, सुभाषित तथा रामकथा परक दोहे भी इस गीत-नृत्य में समाहित होते हैं-

''लीलकंठ कीरा भखै, मुखै बिराजे राम

करनी सो कैसे रहे दरसन सो है काम।

बन के करोवाँ, बन धवाई के छछान

साल्हेबन के सुअना, भजो राम के नाम।

राजा जनक के छोकरी, भर लावत हे नीर

एंड़ी माँजके मुख धोवय, निरखे बदन सरीर।

बेटा कारन दसरथ मरगे, बहिनी कारण कंस

सीता कारन रावन मरगे उहू हे निरबंस।

राम राज में दूध मिले, कृश्णराज में घी

अब के राज में चाय मिले, फूँक-फूँक के पी।''[12]

छत्तीसगढ़ के पुरुष नृत्य-गीतों में डंडा प्रमुख है, जिसे यहाँ 'रास' कहा जाता है। इसके नृत्य-गीतों में रामायण के लोक-प्रचलित प्रसंग प्रमुख रूप से मिलते हैं। सीता अन्वेष्ण का एक प्रसंग द्रष्टव्य है-

''तरी हरी नाना मोरनाना रे भइया,

हरि नाना मोर नाना रे भाई।

राम लखन दुनो भैया मिल के,

जानकी खोजत चाले जाये हो लाल

बेंदरा भालू के दल बल साजे,

भुँई बेंदरा न समाय हो लाल

कटकत रहाय मोर बेंदरा भालू,

सागर के तीन मे जाय हो लाल।''

फाग गीतों में

मस्ती एवं भक्ति के फाग लोकगीतों में सीता-अन्वेष्ण, लंका-दहन, अंगद-रावण-संवाद, राम-रावण-युद्ध आदि प्रसंगों में हनुमान, जाम्बवान आदि के पराक्रम-गान अधिक हुआ है। लंका में युद्ध-प्रसंग आदि का एक दृश्य देखिए, जिसमें राम-दल के वीरों की वीरता का बखान किया गया है-

''हाँ हाँ रे रावन छोड़ दे आसा लंका के

गढ़ लंका चढ़े राजा राम छोड़ दे आसा लंका के।

पहिले द्वारा अंगल ठाढ़े जेन सभा म रोपे पाँव, रावन''[15]

रामकथापरक एक फाग-गीत में राम-सीता के बीच फाग खेलने का प्रसंग आया है, जहाँ मौज-मस्ती नहीं मर्यादा है। यहाँ सीता-राम का समागम केवल एक साधारण नर-नारी

का संगम नहीं है, वह धरती और आकाश का मिलन है तथा सौंदर्य औरसत्य का समांकन है-

"हाँ रे अवध मा राम खेलैं होरी।

भरत सत्रुहन मिल फगुवा गावैं लखन रहै रंग घोरी।।

अबीर गुलाल से रंग गई देहरयाँ निरख जनक किसोरी।

पुर बासी सब खुसी मनावँय स्यामल गौर लख गोरी।।"[16]

कर्मा गीतों में

रामकथापरक कर्मा नृत्य-गीतों में विरह-मिलन, जीवन की क्षणभंगुरता तथा भक्ति-भाव का चित्रण मार्मिकता से होता है। मनुष्य का जीवन नष्वर और क्षणभंगुर है। काल बली के सम्मुख बड़े-बड़े प्रतापी राजे-महाराजे, रंक पराजित हो जाते हैं। झूमर कर्मा के अंतर्गत जीवन के इस शाष्वत सत्य की सरस अभिव्यक्ति हुई है-

"हो हो होय चोला चार दिना के राम।

माटी मा मिल जाही चोला चार दिना के राम।

राजा करन दधीची जहसे बड़े-बड़े दानी

एक दिन आइस सबो चले गिर रावन जस अभिमानी चोला....कोनो रहिस न कोनो रइहीं आही सबके पारी

काल कोनो ल छोड़े नाहीं राजा रंक भिखारी।

चोला चार दिना के राम, माटी मां मिल जाही....."

छत्तीसगढ़ की संपन्न लोक संस्कृति में अनेक लोकनृत्य प्रचलित हैं। इन्हीं प्रचलित लोकनृत्यों में से एक है 'करमा' लोकनृत्य। छत्तीसगढ़ के बिलासुपर, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगाँव, रायगढ़, सरगुजा, जशपुर तथा कोरिया, कवर्धा जैसे जिले में निवास करने वाली जनजातियों द्वारा करमा नृत्य किया जाता है।

जनजातियाँ अपने देवी-देवताओं का वास पेड़-पौधों पर मानती हैं। प्राचीन काल से ही पेड़-पौधों एवं पशुओं के साथ-साथ पितरों की पूजा की परंपरा इनमें रही है। ये देवी-देवता एवं पेड़-पौधों की पूजा कर, अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। पूजित वृक्षों में सरई एवं करम वृक्ष प्रमुख है। जनजाति समूह वर्ष में एक बार वृक्ष के नीचे एकत्रित होकर पूजा-अर्चना कर उत्सव मनाते हैं। करमा नृत्य-गीत में इनका विशेष महत्व है।

इस पर्व की मूल भावना को कालांतर में कर्म एवं भाग्य से जोड़कर इसका एक दूसरा पहलू सामने लाया गया है। करमा नृत्य-गीत कर्म का परिचायक है जो हमें कर्म का संदेश देता है।

करमा नृत्य

करम वृक्ष की टहनी को भूमि पर गाड़कर चारों ओर घूम-घूम कर, करमा नृत्य किया जाता है। करमा नृत्य में पंक्तिबद्धता ही करमा नृत्य का परिचायक है। स्त्री-पुरूष पंक्तिबद्ध होकर नाचते हैं और एक दूसरे का हाथ पकड़कर सीधी पंक्ति में अथवा अर्द्ध घेरे में आमने सामने अथवा दायें-बाँयें चलते हुए नाचते हैं। महिलाओं का दल अलग होता है और पुरूषों का दल अलग होता है। नाचने व गाने वालों की सँख्या निश्चित नहीं होती है कितने भी नर्तक इस नृत्य में शामिल हो सकते हैं बशर्ते नाचने के लिये पर्याप्त जगह हो।

करमा नृत्य में माँदर और टिमकी दो प्रमुख वाद्य होते हैं जो एक से अधिक तादाद में बजाये जाते हैं। वादक नाचने वालों के बीच में आकर वाद्य बजाते हैं और नाचते हैं। बजाने वालों का मुख हमेशा नाचने वालों की तरफ होता है। माँदर और टिमकी के अलावा कहीं-कहीं मंजीरा, झाँझ व बाँसुरी भी बजाये जाते हैं। किसी स्थान में नर्तक पैरों में घुँघरू भी पहनते हैं।

करमा डार के चारों ओर घूम -घूम कर नृत्य करते युवक - युवतियां , गांव बिनकरा , सरगुजा।

करमा नर्तकों की वेषभूषा सादी दैनिक पहनावे की होती है। जिस क्षेत्र में जिस प्रकार के कपड़े और गहने-जेवर पहनने का रिवाज होता है, उसी तरह करमा नर्तक भी पहनते हैं। इसके लिये कोई अलग पहनावा नहीं है। जैसे भील इलाके में धोती, कमीज, जैकेट और साफा पुरूष नर्तक पहनते हैं। उराँव क्षेत्र में पुरूष नर्तक धोती, बंडी व साफा और महिला नर्तक परंपरागत तरीके से साड़ी पहनती हैं। श्रृँगार के साधन में मुख्य रूप से परंपरागत कलगी ही लगाते हैं तथा गहना-जेवर रोजमर्रा के ही पहनते हैं। इस तरह करमा नृत्य में कोई अलग से वेषभूषा तथा सजावट के सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। खेतों में काम करने वाला मजदूर तथा स्थानीय सरकारी नौकर व लड़के भी अपने दैनिक वेषभूषा में किसी प्रकार का श्रृंगार किये बिना नृत्य में शामिल हो जाते हैं। नृत्य अधिकतर रात्रि के समय ही चलता है इसीलिये किसी भी प्रकार के रूपसज्जा की आवश्यकता नहीं होती।

www.ignited.in

जंवारा गीतों में

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और कौशल्या का छत्तीसगढ़ से गहरा जुड़ाव रहा है। यह भी अद्भुत संयोग है कि धर्म-मर्यादा और सात्विक शैर्य के प्रतीक शाक्तिधर राम चैत्र और और क्वाँर नवरात्रों से जुड़े हुए हैं। वासंती नवरात्रों के अंतिम दिन रामनवमी श्रीराम का जन्मदिन है और शारदीय नवरात्रों के एक दिन बाद रावण पर विजय का त्यौहार विजयदशमी शैर्य-पराक्रम से जुड़ा हुआ है। श्क्त परंपरा के लोक-अनुष्ठानिक पर्व जँवारा में श्रीरामकथापरक अनेक प्रसंगों का गान किया जाता है। श्रीराम के वन-गमन के उपरांत अयोध्या नगरी का एक-एक कारुणिक दृश्य इस जँवारा-गीत में देखा जा सकता है-

''सुन्ना होगे अजोध्या केकई कुमति उठाई हो माय।।

घर में रोवें माता कौसल्या, अँगना मँ भरते भाई

ठाढ़े दसरथ प्रान तजत हैं, केकई मन पछिताई।।''

लोक-गीतों की विशेषताएँ

- लोक गीतों की विशेषताएँ इस प्रकार है -
- रचयिता, रचनाकाल एवं प्रमाणिक मूल पाठ का अभाव रहता है।
- उनकी परम्परा मौखिक रहती है। यही इनकी जीवन शक्ति है।
- संगीत एवं नृत्य का अभिन्न संयोग रहता है। लय उनका आवश्यक अंग है।
- लोक गीतों के मूल में जातीय विशेषताएँ, आदिम परम्परायें, धर्म, मत, विश्वास, प्रथायें, संस्कृति एवं संस्कार के दर्शन होते हैं।
- सरलता, स्वाभाविकता एवं भावों की तीव्रता होती है।

लोक-गीत और मानव जीवन

मानव एक संवेदनशील पापी है। जब कभी भी कोई हर्ष या विषाद का दृश्य उपस्थित होता है तो उसको संवेदना के तार झंकृत हो उठते हैं। उसका अन्तःकरण अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है। चूंकी मानव में रागात्मक वृत्ति भी होती है अतः उसके अन्तःकरण की संवेदना माफी का आश्रय ग्रहण कर लयबद्ध गीतों का स्वरूप धारण कर लेती है। अनायास उसके मुख से गीतों का स्रोत फूट पड़ता है। सामान्य लोक जीवन की पार्श्व भूमी में अचिन्त्य रूप से अनायास ही फूट पड़ने वाली मनोभावों की लयात्मक अभिव्यक्ति लोकगीत कहलाती है। 1. जेकब ग्रिम का कथन है कि "लोकगीत अपने आप बनते हैं। 1. डॉ. सदाशिव कृष्ण फड़के लिखते हैं कि लोकगीत विद्यादेवी के उद्यान के कृत्रिम निसर्ग श्वास प्रश्वास है। सहजानन्द से उत्पन्न होने वाली श्रुति-मनोहरत्व से संचिदानन्द में विलीन हो जाने वाली आनन्दमयी धारायें हैं।

उपसंहार

ये गीत स्वाभाविक है, प्रकृति की गोद में इनका जन्म होता है, इनमें किसी प्रकार की कृत्रिमता को स्थान नहीं है। जीवन के ये अनुभव प्रस्तुत है। गीतकार का कोई विशिष्ट उद्देश्य नहीं होता है। वह तो स्वतः सुखाय ही गाता है, अतः उसके हृदय में यश की लालसा नहीं रहती। यही कारण है कि गीतकार अपना नाम तक नहीं कहता। वह अज्ञात ही रहता है, और उसकी कामना भी रहती है। हृदय की सहज निकली हुई अनुभूतियों ही लोकगीत का रूप धारण करती है। ये गीत मानवमन के भाव-चित्र हैं। इनमें किसी भी उच्चकोटि की काव्य रचना के समान रस होता है। लोक गीत भारतीय जीवन एवं संस्कृति के दर्पण है। जीवन के विभिन्न रूपों का सजीव चित्रण इनमें मिलता है। ये गीत जाति लिंग आदि प्राचीरों से प्रकाण्ड पंडित तक सबमें इनका प्रचार है। गान मानव जगत तक ही सीमित नहीं है, पशु-पक्षी भी उल्लास में चहचहा उठते हैं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मध्यप्रदेश का लोक संगीत, प्रो. शरीफ मोहम्मद, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, डॉ. दयाषंकर शुक्ल, वैभव प्रकाशन, रायपुर छ0ग0।
3. नागवंश, लाल प्रद्युमन सिंह, भाग-1
4. अप्रकाशित शोधप्रबंध, छत्तीसगढ़ के लोकनृत्यों के अंगराग का विवेचनात्मक अध्ययन, डॉ. दीपशिखा पटेल।
5. 'देवार' मोनोग्राफ, आलेख, निरंजन महावर, प्रकाशन-मध्यप्रदेश आदिवासी कला परिषद, भोपाल।

6. उराँव जनजाति का सरहुल नृत्य, मड़ई पत्रिका, प्रो. शरीफ मोहम्मद, संपादक-डॉ. कालीचरण यादव।

Corresponding Author

Dr. Ekta Kaushik*

Doctorate

kaushik.ekta@gmail.com